International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 822-823

सल्तनत कालीन प्रशासन की विशेषतायें

डॉ0 केशरी नंदन मिश्र

एसो0 प्रोफेसर (इतिहास) हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नैनी, इलाहाबाद उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

इस प्रशासन का केन्द्र बिन्दु सुल्तान था एवं सल्तनत कालीन प्रशासन अरबी व फारसी पद्धति पर आधारित थी। इसमें फारसी पद्धति की शुरूआत इल्तुतमिश ने की। परन्तु फारसी पद्धति को पूर्ण रूप से लागू करने का कार्य बलबन ने किया। इस प्रशासन पर धर्म और सैन्य तथ्यों का प्रभाव भी था। सल्तनत के अधिकांश शासक खलीफा की सत्ता को स्वीकार करते थे परन्तु उनमे से अधिकांश प्रशासन के किसी हतस्तक्षेप को स्वीकार नहीं करते थे इस सम्बन्ध में कुछ सुल्तानो की नीतियाँ निम्नलिखित थी।

केन्द्रीय प्रशासन : प्रशासन का केन्द्र बिन्दु सुल्तान था जिसकी सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद थी जिसे मलजिस–ए–खलवत कहा जाता है। इसकी बैठक जहाँ होती थी उसे मजलिस–ए–खास कहते थे। सुल्तान अपने प्रमुख अधिकारियो से जहाँ मिलता था उसे बार–ए–आजम कहते थे। सुल्तान अपने अधिकारियो मे दो अधिकारी वजीर व अमीर सबसे महत्वपूर्ण थे।

वजीर : बाजारत्व का स्वर्णकाल तुगलक काल विशेषकर फिरोज तुगलक का काल था जबकि बाजारत्व का निम्न काल बलबन का काल माना जाता है।

अमीर : अमीरो का स्वर्णकाल लोदी काल, विशेषकर बहलोल लोदी जबकि अमीर का निम्नकाल अलाउद्दीन खिलजी व बलबन का काल था।

सल्तनत में चार केन्द्रीय विभाग थे –

1. **दीवाने बजारत** : यह सल्तनत विभाग का सबसे महत्वपूर्ण विभाग था इसका प्रमख वजीर था जबकि उसकी सहायता नाइब–ए–वजीर करते थे।
2. **दीवाने अर्ज** : यह सैन्य विभाग था इसकी स्थापना बलबन ने की इसका प्रमुख नियुक्ति इमादुलमुल्क की गयी और उसे ''रावत–ए–अर्ज'' की उपाधि दी गयी।
3. **दीवाने रसावल** : यह विदेश विभाग था।
4. **दीवाने इंशा** : यह पत्रकारा विभाग था इस विभाग की केन्द्रीय स्थिति फिरोजतुगलक के काल तक आते–आते नीचे आ गई।

उपर्युक्त चारो विभागो में दीवाने बजरह सबसे महत्वपूर्ण भाग जिसके अन्तर्गत अनेक विभाग व अधिकारी थे।

1. **दीवाने वकूफ** : जलालुद्दीन खिलजी द्वारा स्थापित किया गया विभाग व्यय की कागजात की देखभाल करने के लिए।
2. **मुस्तखराज** : अलाउद्दीन द्वारा स्थापित इस विभाग जिसका मुख्य उद्देश्य अधिकारियों के नाम बकाया भू–राजसव वसूलना था।
3. **दीवाने–अमीर–कोही :** मु0 तुगलक द्वारा स्थापित इस विभाग जिसका मुख्य उद्देश्य बंजर भूमि को कृषि भूमि मे बदलना था।
4. **दीवाने इमारत :** फिरोज तुगलक द्वारा स्थापित लोक निर्माण विभाग।

वजीर की सहायता के लिए निम्न प्रमुख अधिकारी होते थे –

1. मुशरिफ–ए–मुमालिक – महालेखाकार।
2. मुस्तौफी–ए–मुमालिक – महालेखा परीक्षक।
3. दीवाने बयूतात – आय–व्यय से सम्बन्धित अधिकारी।
4. खजीन – खजांची।
5. नाजिर – माप–तौल का अधिकारी।

अन्य प्रमुख विभाग

सल्तनत काल में इन 4 केन्द्रीय विभागो के अतिरिक्त निम्नलिखित अन्य विभाग भी थे :–

नाइब–ए–ममलिकात : सर्वप्रथम बहरामशाह ने इस विभाग की स्थापना की इस पद पर पहली नियुक्ति इख्तियारूद्दीन ऐतगीन की हुई। परन्तु इस पद का सबसे ज्यादा उपभोग बलबन ने किया।

वकील–ए–सल्तनत : नासिरूद्दीन महमूद द्वारा स्थापित विभाग इसका कार्य शासन व सैन्य प्रशासन का देख भाल करना था।

दीवाने काजा : न्याय विभाग, इसका प्रमुख काजी होता था।

सद्र–ए–सुदुर : धर्म एवं दान विभाग, इस पर भी काजी की नियुक्ति की जाती थी।

वरीद–ए–मुमालिक : गुप्तचर विभाग, गुप्तचर अर्थात् बरीद की नियुक्ति सर्वप्रथम बलबन ने किया परन्तु इसे व्यवस्थित करने का कार्य अलाउद्दीन ने किया। जब उसके बरीद के साथ मुनहियन (गुप्तचर, संवाददाता, लेखक) की भी नियुक्ति की।

दीवाने इस्तिकाह – पेशंन विभाग।

दीवाने खैरात – दान विभाग।

दीवाने बंदगान– दास विभाग।

दारूल शफा – निःशुल्क औषधालय।

विभिन्न प्रमुख अधिकारी

वकील–ए–दर/दबीर–ए–मुमालिक : शाही महल या सुल्तान की व्यक्तिगत सेवाओ की देखभाल करने वाला अधिकारी।

बारबक : दरबार की शान–शौकत एवं रस्मो की देखभाल करने वाला अधिकारी।

अमीर–ए–हाजिब : दरबारी शिष्टाचार का अधिकारी, यह सुल्तान से मिलने वालो की जाँच पड़ताल करता था।

अमीर–ए–मजलिस : शाही उत्सवों एवं दावतों का प्रबन्धन करने वाला अधिकारी।

सर–ए–जॉदार : सुल्तान के अंगरक्षकों का प्रमुख अधिकारी।

अमीर–ए–आखूर : अश्वशाला का प्रमुख अधिकारी।

शाहना–ए–पील : हस्तिशाला का प्रमुख अधिकारी।

प्रान्तीय प्रशासन

केन्द्र, प्रांतों में विभाजित थे जिसे एक्ता /अक्ता भी कहा जाता है इसका प्रमुख एक्तादार/मुक्ता/बलि कहलाता था। सल्तनत काल में मु0 तुगलक के समय में सर्वाधिक 23 इक्ता था।

स्थानीय प्रशासन

एक्ता या प्रांत जिलो में विभाजित थे जिसे शिक कहा जाता था इसका प्रमुख शिकदार होता था। शिक तहसीलों में विभाजित थे जिसे सरकार या परगना कहा गया। यहाँ का प्रमुख अधिकारी आमिल होता था। इसकी सहायता खजीन या खजान्ची करते थे। प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी यहाँ 3 प्रमुख अधिकारी थे।

1. खूत – जमीदार।
2. मुकद्दम – गाँव का मुखिया।
3. चौधरी– भू–राजस्व वसूलने वाला अधिकारी।

सैन्य प्रशासन

सल्तनत काल की केन्द्रीय सेना को हश्म–ए–कल्ब कहा गया जबकि सल्तनत कालीन प्रान्तीय सेना को हश्म–ए–अतरफ कहा जाता था। सल्तनतकालीन केन्द्रीय घुड़सवार सेना को सवार–ए–क्लब और प्रान्तीय घुड़सवार सेना सवार–ए–अतरफ कहते थे सल्तनत काल में स्थायी सेना को खास–खेल कहा जाता था। सल्तनत काल मे सैन्य विभाग दीवाने अर्ज की शुरूआत बलबन ने की। परन्तु स्थायी सेना (खड़ी सेना) की शुरूआत अलाउद्दीन ने की। उसी ने सैनिको को नगद वेतन देने (234 टंक प्रतिवर्ष) घोड़ों को दागने और सैनिको के पहचान पत्र की शुरूआत की जबकि फिरोज तुगलक ने सैनिको को अललाकी (इतलाकी) भूमि के रूप में वेतन दिया। सैनिको ने अपने गुप्तचर होते थे जिन्हे तुलेअह व पजकी कहा जाता था जो शत्रु सैनिको की गतिविधियों की सूचना देते थे। अलाउद्दीन ने सर्वप्रथम अपनी घुड़सवार सेना को मध्य एशिया की मंगोले की दशमलव प्रणाली के आधार पर संगठित किया।

10–घुड़वार– 1 सर–ए–खेल
10–सर–ए–खेल– 1 सिपहसालार
10 सिपहसालार – 1 अमीर
10 अमीर– 1 मलिक
10 मलिक –1 खान

तुर्को की सेना मे हिन्दू–मुस्लिम अफगानी आदि विभिन्न प्रकार के सैनिक होते थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- बी0एल0 गोवर, अलका मेहता एवं यश पाल : आधुनिक भारत का इतिहासः एक नवीन मूल्यांकन, 2014।
- एस0के0 पाण्डेय : आधुनिक भारत, 2014।
- एस0के0 पाण्डेय : मध्यकालीन भारत, 2014।
- द्विजेन्द्र नारायण झा, कृष्ण मोहन श्रीमाली, प्राचीन भारत में इतिहास 2005 ।
- मनोज सिन्हा, समकालीन भारत : एक परिचय, 2014।